



हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी, शिमला, हि०प्र० (171013)

अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस के आयोजन बारे में रिपोर्ट

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 21 मार्च 2022 को 'अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस' का आयोजन किया। डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ, प्रभागाध्यक्ष विस्तार प्रभाग ने आमंत्रित मुख्य वक्ता डॉ. सविता (Former PCCF & HoFF, Himachal Pradesh), हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक, डॉ० एस० एस० सामंत, अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, शोधार्थियों तथा अन्य प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम की रूप रेखा प्रस्तुत की तथा 'अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस' के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में संस्थान के विभिन्न फिल्ड रिसर्च स्टेशनों में कार्यरत कर्मचारियों ने ऑनलाइन माध्यम से भाग लिया। कुल मिलाकर लगभग 95 लोगों ने इस आयोजन में भाग लिया।

डॉ. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक-जी एवं समूह समन्वयक अनुसंधान ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस मनाने का चयन 21 मार्च किया गया है, क्योंकि इस तारीख को दिन रात बराबर होते हैं, जो संतुलन का प्रतीक है। इसी प्रकार हमें उत्पादन एवं उपभोग में संतुलन बनाए रखना है। उन्होंने वनों के सतत उत्पादन और खपत में मृदा के महत्व के बारे में बात की। उन्होंने सुभाष पालेकर द्वारा प्राकृतिक खेती के अंतर्गत दी गयी "जीवाअमृत" तकनीक की मृदा के कार्याकल्प में भूमिका के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि यह घोल मृदा के कार्याकल्प हेतु अमृत के समान है। इसके अलावा डॉक्टर शर्मा ने कहा कि चूंकि जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति जमीन की कमी हो रही है, अतः कृषि वानिकी को अपनाया जरूरी हो गया है ताकि कम जमीन पर अधिक उत्पादकता प्राप्त की जा सके।

डॉ० एस० एस० सामंत, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद एवं हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और वनों के संरक्षण में दिये गए योगदान के बारे में बताया। उन्होंने हिमालय के वनों के बारे में बात करते हुए कहा कि ये हिमालय एवं मैदानी इलाकों में रहने वाले लोगों को पारिस्थिकी सेवाएँ प्रदान करते हैं। डॉ० सामंत ने बताया कि पर्वतीय क्षेत्र जैव विविधता के भंडार हैं और यह जीवन और पर्यावरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हिमालयन क्षेत्रों में 10502 पौधों की प्रजातियाँ हैं, जिसमें से लगभग 4000 प्रजातियाँ महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि विभिन्न मानव जनित गतिविधियों के कारण जैव विविधता का ह्रास तेजी से हो रहा है तथा ये कारक जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा दे रहे हैं। उन्होंने आगे बताया कि प्राकृतिक वनों में आक्रामक विदेशी प्रजातियों की समस्या से निपटना चुनौती हो गया है। वनों की उत्पादकता बढ़ाना अति आवश्यक है। इसके अलावा उन्होंने जलचक्र में वनों के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

इसके उपरान्त मुख्य वक्ता डॉ. सविता, भा.व.से. (Former PCCF & HoFF) ने 'अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस-2022' की थीम 'वन और सतत उत्पादन और खपत' पर विस्तृत जानकारी प्रदान दी। उन्होंने वनों की जीवन एवं जीवों के लिये महत्ता पर बात करते हुए कहा कि 1.7 बिलियन आवादी प्रत्यक्ष रूप से वनों पर आश्रित हैं। उन्होंने उत्पादन और खपत में संतुलन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने ग्रीन इंडिया मिशन के बारे में बात करते हुए कहा कि कैसे अनुकूलन और शमन उपायों के संयोजन से यह मिशन भारत के कम होते वन आवरण को बहाल करने और जलवायु परिवर्तन के खतरे से निपटने के लिए तैयार करने में योगदान दे रहा है।

डॉ. सविता ने कहा कि हर पौधा अपने जीवन में जल का कुछ न कुछ मात्रा में संरक्षण करने में योगदान करता है, अतः हम सभी का कर्तव्य है कि वनों के संरक्षण में बड़बड़ कर योगदान करना चाहिए। कार्यक्रम का समापन डॉ. जोगिंदर चौहान के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ।




